Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – CSE

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 3

आधुनिक इतिहास एवं स्वतंत्रता के बाद का भारत

SIERRA INNOVATIONS

IAS

पेपर -1 भाग - 3

आधुनिक भारत का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन**	**1**
	• यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक	1
	• भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण	1
	• विदेशी शक्तियां	1
2.	**मुगल साम्राज्य का पतन**	**8**
	• विदेशी आक्रमण	8
	• उत्तर कालीन मुगल साम्राज्य	8
	• मुगल साम्राज्य के पतन के कारण	10
3.	**नए राज्यों का उदय**	**12**
	• उत्तराधिकारी राज्य	12
	• योद्धा राज्य	13
	• स्वतंत्र राज्य	13
4.	**भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार**	**14**
	• वणिकवाद	14
	• प्राच्यवाद (ओरिएण्टलिज्म)	14
	• भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताएँ	14
	• बंगाल	15
	• मैसूर	18
	• मराठा	20
	• पंजाब	22
	• सिंध	24
	• अवध	25
	• पड़ोसी देशों में ब्रिटिश विस्तार	25
	• ब्रिटिश की विस्तारवादी नीतियाँ	28
5.	**1857 तक प्रशासनिक व्यवस्था**	**30**
	• ब्रिटिश प्रेसीडेंसीयाँ	31
	• 1857 तक संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास	32
6.	**1857 का विद्रोह**	**34**
	• 1857 के विद्रोह का महत्व	34
	• 1857 के विद्रोह के कारण	34
	• प्रसार	35
	• 1857 के विद्रोह के दौरान क्षेत्रीय नेता	36
	• विद्रोह का दमन	37
	• विद्रोह से जुड़े ब्रिटिश सेना के अधिकारी	37
	• असफलता के कारण	38

	• विद्रोह का प्रभाव	38
7.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम 1858 • भारत परिषद अधिनियम 1861 • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवा में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून • भारत परिषद् अधिनियम 1892	**40** 40 40 41 41 41 41 42 42
8.	**सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)** • कारण • प्रमुख समाज सुधारक • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आन्दोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • थियोसोफिकल मूवमेंट • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव	**43** 43 43 48 51 53 53 54 54
9.	**ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था** • ब्रिटिश भू राजस्व नीतियाँ • व्यापार एवं वाणिज्य • धन की निकासी सिद्धांत • ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक विकास • भारत में डाक प्रणाली	**55** 56 59 59 60 63
10	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • 1857 से पहले की शिक्षा • 1857 के बाद की शिक्षा • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन • प्रेस का विकास • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास	**64** 64 65 66 66 66 66 67 67 68
11.	**ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन** • लोगों के प्रतिरोध के लिए जिम्मेदार कारक • नागरिक विद्रोह • राजनीतिक धार्मिक आंदोलन • सामंती विद्रोह • अन्य नागरिक विद्रोह • आदिवासी विद्रोह • किसान आंदोलन	**71** 71 71 71 72 74 75 77

	• प्रांतों में किसान गतिविधि	80
12.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)** • देश का एकीकरण • शिक्षा और पश्चिमी विचार • प्रेस और साहित्य • स्थानीय साहित्य का विकास • भारत के अतीत की पुनर्खोज • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन • मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय • सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियां और नस्लीय विरोध • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी चरण (1885-1905)	**82** 82 82 82 82 82 83 83 83 83 84 84
13	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग/ चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907) • सरकार की रणनीति • 1909 के मॉर्ले मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण • विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां • प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन • होम रूल लीग आंदोलन • कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916) • लखनऊ पैक्ट	**87** 87 88 88 89 91 91 92 92 92 93 94 95 95 96 96
14	**जन आंदोलन : गांधीवादी युग (1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • संघर्ष का मध्यम चरण (1894-1906) • निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914) • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अथवा भारत सरकार अधिनियम, 1919 • रॉलेट एक्ट (1919) • जलियांवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919) • खिलाफत आंदोलन • असहयोग / खिलाफत आंदोलन	**98** 98 98 98 99 100 101 102 102 103
15.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925 1939)** • कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी • मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान	**106** 106 107 108

	• क्रांतिकारी गतिविधियां	108
	• साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927)	109
	• मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927)	110
	• नेहरू रिपोर्ट (1928)	110
	• जिन्ना के चौदह सूत्र	110
	• कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928)	111
	• इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929)	111
	• दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929)	111
	• कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929)	111
	• सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)	111
	• कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931)	112
	• गोलमेज सम्मेलन	114
	• सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू करना	114
	• सांप्रदायिक पुरस्कार और पूना पैक्ट	115
	• गांधीजी और अम्बेडकर वैचारिक समानताएं और मतभेद	116
	• भारत सरकार अधिनियम, 1935	117
	• कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन	117
	• द्वितीय विश्व युद्ध (1939)	118
	• वर्धा में सीडब्ल्यूसी (कांग्रेस वर्किंग कमिटी) की बैठक	118
	• कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940)	118
	• सुभाष चंद्र बोस	118
	• गांधी और बोस वैचारिक मतभेद	119
16.	**स्वतंत्रता की ओर (1940 1947)**	**121**
	• मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940)	121
	• अगस्त प्रस्ताव (1940)	121
	• व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941)	121
	• द क्रिप्स मिशन (1942)	122
	• भारत छोड़ो आंदोलन (1942)	122
	• गांधी के अनशन	124
	• 1943 का बंगाल अकाल	124
	• राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944)	125
	• देसाई लियाकत समझौता (1945)	125
	• वेवेल योजना (1945)	125
	• सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)	125
	• आम चुनाव (1945 46)	126
	• 1945 46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये	127
	• कैबिनेट मिशन (1946)	127
	• प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और सांप्रदायिक दंगे	128
	• संविधान सभा का चुनाव (1946)	128
	• अंतरिम सरकार	128
	• लीग का अवरोधक दृष्टिकोण	129
	• भारत में साम्प्रदायिकता	129

	• संविधान सभा का गठन (1946) • क्लेमेंट एटली की घोषणा • माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) • भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम	130 130 130 131
17.	**स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत** • सीमा आयोग • संसाधनों का विभाजन • रियासतों का एकीकरण	**132** 132 132 132
18.	**महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ** • गवर्नर जनरल • वायसराय • कांग्रेस के कुछ महत्वपूर्ण सत्र • क्रांतिकारी संगठन/पार्टियाँ • क्रांतिकारी घटनाएँ/मामले	**135** 135 136 140 142 142
19.	**राज्यों का पुनर्गठन** • भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन • आजादी से पहले • आजादी के बाद • 1956 के बाद नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश बनाए गए	**143** 143 143 144 146
20.	**नेहरू की विदेशी नीति** • भारतीय विदेश नीति का स्वतंत्रता-पूर्व स्टैंड • भारत की विदेश नीति को नियंत्रित करने वाले मूल सिद्धांत • पंचशील • गुटनिरपेक्ष आंदोलन • NAM- ने भारत को कैसे लाभान्वित किया हैं? • उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद विरोधी की नीति • अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान • विदेशी आर्थिक सहायता - संयुक्त राष्ट्र को सहायता, अंतर्राष्ट्रीय कानून और एक न्यायसंगत और समान विश्व व्यवस्था	**148** 148 148 148 150 151 152 153 153
21.	**स्वतंत्र भारत के बाद भूमि सुधार** • भूमि सुधार की आवश्यकता • भूमि सुधार विफलता के कारण • भूमि सुधार, कृषि उत्पादकता और गरीबी उन्मूलन के बीच संबंध	**154** 154 156 156
22.	**आजादी के बाद से भारत के युद्ध** • पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध: 1947-48 • दूसरा भारत-पाकिस्तान युद्ध: 1965	**157** 157 157

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

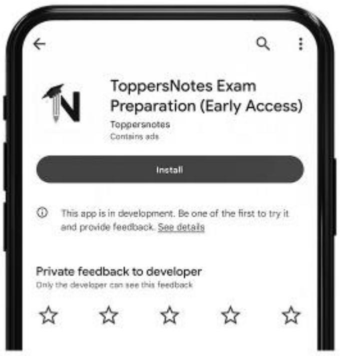

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

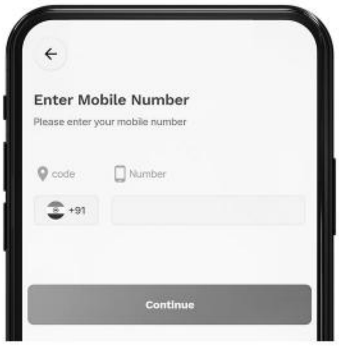

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

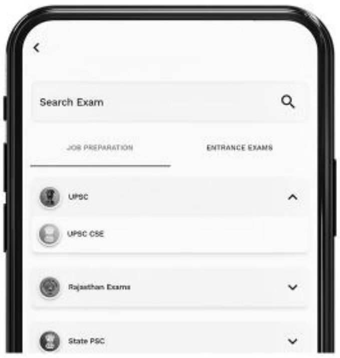

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

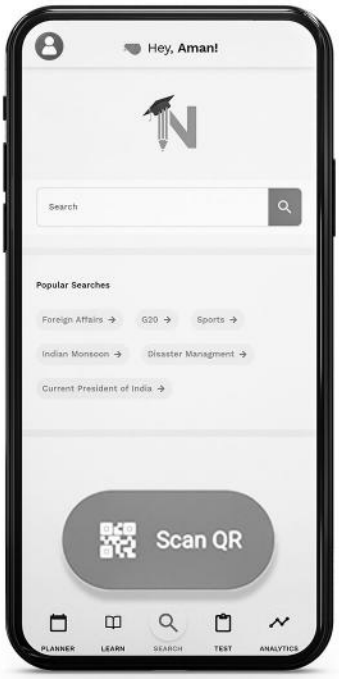

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

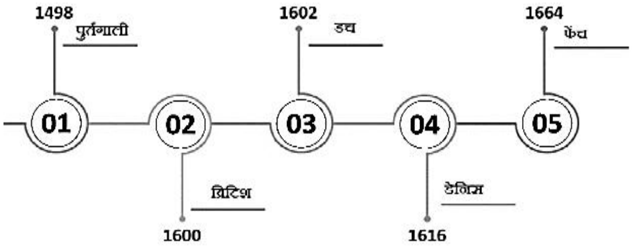

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- **उष्ण कटिबन्धीय वस्तुओं** जैसे-मसाले,रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी के बरतन आदि की **यूरोप में भारी माँग**
- 1453 ई. में **कुस्तुनतुनिया (तुर्की)पर उस्मानिया तुर्कों का कब्जा** जिससे यूरोपियों का एशियाई व्यापार बाधित हुआ तथा नये व्यापार मार्गों की आवश्यकता उत्पन्न हुई
- **पुनर्जागरण एवं वैज्ञानिक क्रान्ति** के फलस्वरूप यूरोप में समुद्री कम्पास, जहाज की चाल मापने वाला उपकरण, एस्ट्रोलैब (अक्षांश -देशान्तरमापक), त्रिकोणपाल, तोपों एवं बन्दूकों काअविष्कार हुआ। इससे समुद्री यात्राएँ काफी सुरक्षित हो गयी।
- **भारत की अपार संपदा:** मार्को पोलो और कुछ अन्य स्रोतों से यूरोपीय लोगों को भारत की अपार संपत्ति के बारे में पता चला।
- **युरोप में तीव्र औद्योगीकरण** तथा बाजार के विस्तार की खोज आकांक्षा
- तत्कालीन भारत में **कमज़ोर मुग़ल सत्ता** तथा नवीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय

भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण-

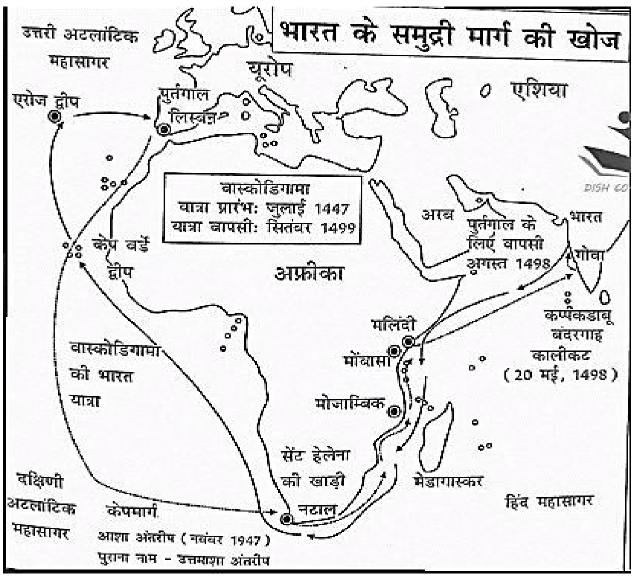

विदेशी शक्तियाँ

1. पुर्तगाली

- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- भारत में व्यापार करके अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथो में था इस व्यापार चक्र को तोड़ने के लिए नए व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकता थी
- **यूरोपीय शासकों** जैसे स्पेन की महारानी ईशाबेला तथा पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी आदि द्वारा **समुद्री खोजो को प्रोत्साहन**।
- **साहसी नाविकों का योगदान**: बार्थोलोमियो डियास (पुर्तगाली नाविक) ने 1487 ई. में उत्तम आशा अन्तरीप **'Cape of Good Hope'** की खोज की। 1492 ई. में स्पेनवासी कोलम्बस अमेरिका तथा 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** भारत पंहुचा।

<u>**पुर्तगालियों के प्रारम्भिक अभियान**</u>

वास्कोडिगामा	• कैप ऑफ़ द गुड होप होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बंदरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर 17 मई 1498 को पंहुचा। • कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापर करने की अनुमति प्राप्त की • कन्नूर में, उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया
पेड्रो अल्वारेज़ कैबरेल	• 1500 में कालीकट में भारत में पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया • पुर्तगालियों पर अरब हमले का सफलतापूर्वक जवाब दिया • कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं

फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	• यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था । • 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। • उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनवाए। . • इसने ब्लू वाटर पॉलिसी तथा कार्टेज प्रणाली जारी की
अल्फांसो डी अल्बुकर्क (1509-1515)	• भारत में पुर्तगालियों का वास्तविक संस्थापक • 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसुफ आदिल शाह से गोवा छीना • पुर्तगालियों को भारत में बसने तथा भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया • पहला गवर्नर था जिसने अपने क्षेत्राधिकार में सती प्रथा पर रोक लगाई। • पुर्तगाली सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की • विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय से इसके अच्छे सम्बन्ध थे । • अधिकार का क्रम ○ गोवा 1510 ○ मलक्का 1511 ○ हारमुज 1515 • इसने गोवा को राजनितिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभारा
नीनो-डी-कुन्हा	• गोवा को राजधानी बनाया • अंग्रेजो के मुकाबले नौसैनिक क्षमता में पिछड जाना । • धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाना • भारतीय स्त्रियों से विवाह एवं धर्मान्तरण • व्यापारिक प्रशासन में अकुशलता • रिश्वतखोरी एवं प्रशासनिक नियुक्तियों में भ्रष्टाचार • डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती
नोट 1503 ई. में कोचीन (कोल्लकी स्थापना की जिसे **एस्तादो दा इण्डिया** कहा गया । कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी एक गवर्नर होता था। इसे कम्पनी के हित में व्यापार, संधि, युद्ध विस्तार के अधिकार दिये गये ।	

ब्लू वाटर पॉलिसी -

- हिन्द महासागर क्षेत्र में पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्मीडा की सामुद्रिक नीति को ब्लू वाटर पॉलिसी के नाम से जाना जाता है

कार्टेज़ प्रणाली-

- 16वीं शताब्दी में हिंद महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी नौसैनिक व्यापार लाइसेंस।
- इसी प्रकार की ब्रिटिश व्यवस्था = 20वीं सदी में नौसैनिक प्रणाली।

<u>भारत में पुर्तगाली विस्तार</u>

- मुंबई से दमन और दीव और फिर गुजरात तक गोवा के तट के आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया
- सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों की स्थापना की।
- 1579 के लगभग शाही फरमान ने उन्हें व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास बसा।

<u>पुर्तगालियों का महत्व</u>

सैन्य:

- बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
- फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
- स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

नौसेना तकनीक

- मल्टी-डेक वाले भारी जहाजों का निर्माण किया गया था इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा मिली।
- शाही शस्त्रागार और डॉकयार्ड का निर्माण

सांस्कृतिक कार्य

- सिल्वरस्मिथ और सुनार की कला गोवा में फली-फूली, फिलाग्री वर्कऔर धातु के काम में गहनों का केंद्र बन गया।
- पुर्तगालियों द्वारा चर्चों के आंतरिक भाग में लकड़ी का काम, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।

2. डच

<u>डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन</u>

- **कॉर्नेलिस हाउटमेन-** 1596 में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी का गठन - “यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड” मूल नाम - VOC (vereenigde Oost Indische Compagnie) वेरिंग्देओस्त इंडिस
- डच कम्पनी एक अर्धसरकारी कम्पनी थी जो एक निदेशक मंडल द्वारा चलाई जाती थी । इसमें कुल 17 व्यक्ति शामिल थे जिन्हें **Gentlemen** 17 कहा जाता था ।
- **कम्पनी के दो मुख्यालय थे** - एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बटाविया (इण्डोनेशिया)

- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई ।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की
- डचों ने भारत में मुख्यतः पूर्वी तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की जो निम्न हैं-

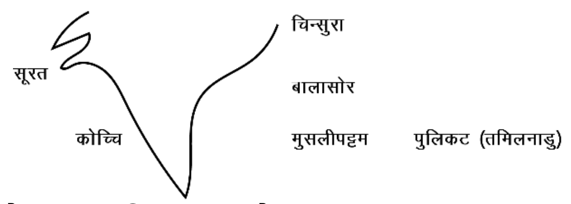

<u>डचों द्वारा स्थापित कारखाने</u>
- प्रथम - मसूलीपत्तनम
- द्वितीय - पत्तोपोली (निज़ामपट्नम)
- तृतीय- पुलीकट 1610
- अन्य कारखाने – सूरत (1616), विमलीपत्तनम, कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), कोचीन (1663), कासिम बाजार, बालासोर, नागापत्तनम (1658)

मुख्यालय
- पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केंद्र एवं मुख्यालय बनाया
- 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया

प्रमुख किला या फोर्ट
- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ईसवी में हुई
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना 1663 ईसवी में हुई

नोट
- डचों ने मलक्का या मसाला द्वीप जिसे इंडोनेशिया कहा जाता है इसको पुर्तगालियों से जीता एवं श्रीलंका को भी जीता
- डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बटाविया की स्थापना की
- मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 प्रतिशत वार्षिक चुंगी पर बंगाल ,बिहार और ओडिसा में व्यापार का एकाधिकार डचों को प्रदान किया
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता या कार्टल पर आधारित थी
- डच मूल रूप से काली मिर्च एवं अन्य मसालों के व्यापार में ही रूचि रखते थे ये मसाले मूलतः इंडोनेशिया में अधिक मिलते थे इसलिए वह डच कम्पनी का प्रमुख केंद्र बन गया
- डचों ने भारत में मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ो के व्यापार को अधिक महत्व दिया
- भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

<u>भारत में डचों के अधीन व्यापार</u>
- **नील उत्पादक प्रमुख क्षेत्र :** यमुना घाटी और मध्य भारत,
- **कपड़ा और रेशम**: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
- **साल्टपीटर:** बिहार
- **अफीम और चावल**: गंगा घाटी।
- काली मिर्च और मसालों का एकाधिकार व्यापार।

आयात-निर्यात
- डच सोना-चाँदी, पारा, ऊन तथा काँच की वस्तुएँ भारत से ले जाते थे ।
- वे भारत से सूती एवं रेशमी वस्त्र, धागा, नील, अफीम, मसाले, चीनी, धातु की बनी वस्तुएँ, शोरा आदि निर्यात करते थे ।

<u>डचों के पतन कारण</u>
- अंग्रेजों से प्रतिद्वंदिता
- डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था इसलिए कंपनी अपनी इच्छा अनुसार विस्तार नहीं कर सकती थी
- अंग्रेजों की नौसैनिक शक्ति डचों की तुलना में अधिक मजबूत थी
- डचों की भारत से अधिक रूचि इंडोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी
- कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अयोग्य प्रशासक
- 1759 ई. में बेदरा (बंगाल) के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की शक्ति भारत में समाप्त हो गयी। बाद में इन्होंने अपनी अधिकांश फैक्ट्रियाँ अंग्रेजो को बेच दी ।
- कोलाचेल की लड़ाई (1741) डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा की लड़ाई ने मालाबार क्षेत्र में डच सत्ता का पूर्ण सफाया कर दिया।

<u>महत्व</u>
- **भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है**

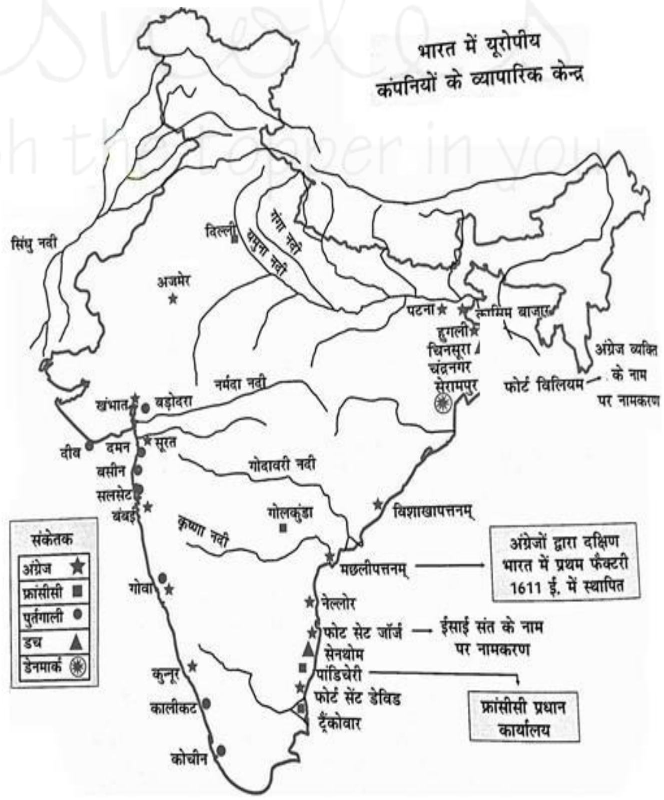

3. ब्रिटिश/अंग्रेज

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा, सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

ईस्ट इण्डिया कंपनी /Cop – शेयरहोल्डर्स

वैतनिक अधिकारी
- (1 Governar (प्रथम गर्वनर)
- 1 Deputy Governor
- 22 Member कर्मचारी

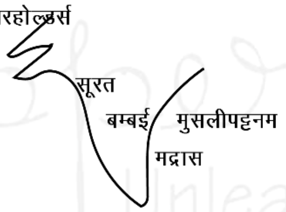

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियों की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना - 1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

मुग़ल तथा अंग्रेज

- 1691 में औरंगजेब ने एक निश्चित राशि के बदले कंपनी को बंगाल में चुंगी रहित व्यापार की अनुमति दी।
- **शाही फरमान - मुग़ल सम्राट फर्रुखशियर** की बीमारी का इलाज कंपनी के एक डॉक्टर **विलियम हैमिल्टन** के

द्वारा सफलता पूर्वक किया गया जिससे बादशाह ने खुश होकर एक **फरमान** जारी कर दिया जिसमे एक निश्चित **वार्षिक कर 3000 रुपये** चुकाकर निशुल्क व्यापर करने एवं मुंबई में कंपनी ढाले गए सिक्के को संपूर्ण मुग़ल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गयी। अब उन्हें वही कर देने पड़ेगे जो भारतीयों को देने पड़ते है।

- ब्रिटिश इतिहासकार औरर्म्स ने इसको **कंपनी का अधिकार पत्र या मैग्नाकार्टा** कहा।
- बंगाल के नबाव मुर्शीद कुली खां ने फर्रुखशियर द्वारा दिए गए फरमान के बंगाल में स्वतंत्र प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास किया
- मराठा सेना नायक **कान्होजी आगरिया** ने पश्चमी तट पर अंग्रेजों की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया।

बंगाल में विस्तार

- बंगाल में कारखाने**: हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना** और **राजमहल।**
- **सुतानती,कालिकाता और गोविंदपुर** तीनो गांव को मिलाकर **जॉब चार्नोक** ने कलकत्ता शहर की नीव रखी और कंपनी ने यही पर **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की और **चार्ल्स आयर को प्रथम प्रेसीडेंट** नियुक्त किया गया ।
- कलकत्ता को अंग्रेजों ने 1700 में पहला प्रेसीडेंट नगर घोषित किया। 1774 से 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।

4. फ्रांसीसी

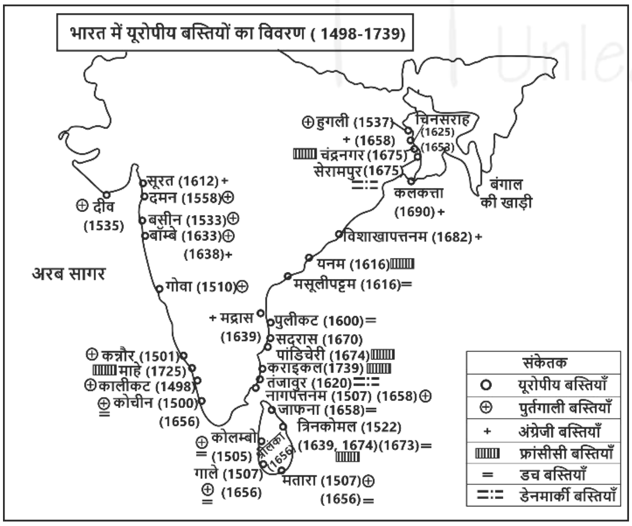

<u>फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी</u>

- भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति
- फ्रांस के सम्राट **लुई 14वे** के मंत्री कॉल्बर्ट ने **1664** में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे **'The compaginie des Indes Orientales'** कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- प्रथम फ्रांसिसी फैक्ट्री **- सूरत में 1668** में **फ्रांसिस केरॉन** द्वारा
- **1669** में **मसूलीपट्टनम** में दूसरी फ्रैंच फैक्ट्री की स्थापना की
- **'पांडिचेरी' की नींव** -1673 में कंपनी के निदेशक **फ्रेंको मार्टिन तथा लेस्पिने** ने **वलिकोण्डपुरम के सूबेदार शेरखान लोदी** से कुछ गॉव प्राप्त कियेजिसे कालान्तर में **पांडिचेरी** कहा गया
- **1673** में बंगाल के **नबाब शाइस्ता खान** ने फ्रांसिसीयो को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की प्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गयी ।
- पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का **मुख्यालय** बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया सितंबर 1697 में संपन्न हुई रिसविक की संधि से पांडिचेरी फ्रेंच को वापस मिला
- पांडिचेरी के कारखाने में ही **मार्टिन** ने **फोर्ट लुई** का निर्माण कराया।
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मारीशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराईकल पर अधिकार कर लिया गया ।
- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार
- 1742 ई. के पश्चात व्यापारिक लाभ कमाने के साथ साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वकांक्षाए भी जाग्रत हो गई। परिणामस्वरुप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को **'कर्नाटक युद्ध'** के नाम से जानते है।

<u>ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता</u>

- भारत में एंग्लो-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित और भ्रमित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह बूढ़े थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से लड़ने में लगे हुए थे।अत: एंग्लो फ्रेंच प्रतिद्वंद्विता की परिणीति कर्नाटक युद्धों के रूप में हुई

<u>फ्रांसीसियों की पराजय के कारण</u>

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी होने के कारण निर्णय लेने मे विलंब
- अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव
- नौसैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिशकंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ।

महत्व

- राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

डेनिश का भारत में आगमन

- **डेनमार्क** की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्था0पना **1616** में की गई थी |
- ये भी व्यापार के उद्देश्य से यह भी भारत में आये
- पहली फैक्ट्री - त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) 1620 में
- दूसरी फैक्ट्री - सीरमपुर (बंगाल) 1676 में
- 1745 में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेच दी एवं भारत से चले गए |

कर्नाटक युद्ध

- कोरोमंडल समुद्र तट पर स्थित क्षेत्र जिसे कर्नाटक या कर्णाटक कहा जाता था। परंतु अधिकार को लेकर इन दोनों कंपनियों में लगभग बीस वर्ष तक संघर्ष हुआ।
- कोरोमंडल समुद्रतट पर स्थित किलाबंद मद्रास और पांडिचेरी क्रमशः अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बस्तियाँ थी। तत्कालीन कर्नाटक दक्कन के सूबेदार के नियंत्रण में था, जिसकी राजधानी आरकाट थी।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

- **कारण** -आस्ट्रिया के उताराधिकार युद्ध का विस्तार।
- तात्कालिक कारण - अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहांजों पर अधिकार कर लेना। बदलें में मारीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बुर्डोने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया।
- **नेतृत्व** - अंग्रेजों का नेतृत्व बर्नेट तथा फ्रांसीसियों का डूप्ले कर रहे थे।
- **परिणाम** - कर्नाटक के नवाब की सहायता से युद्ध में फ्रांसीसी विजयी हुए । इस युद्ध में नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।
- **संधि**- 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) यह युद्ध अडयार नदी के तट पर फ्रांसीसियों (डूप्ले) तथा कर्नाटक के नबाव (अनवरुद्दीन) के बीच । डूप्ले की विजय।

- **युद्ध का कारण** - डूप्ले द्वारा नवाब से किये गये वादे से पीछे हटना
- महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना का फ्रांसीसियों पर आक्रमण, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।

- जून,1748 ई. में अंग्रेज रियर-एडमिरल बोस्काबेन के नेतृत्व में एक जहांजी बेडे ने पांडिचेरी को घेरा,परंतु सफलता नहीं मिली।

Note: यह प्रथम युद्ध था जिसमें किसी यूरोपीय शक्ति ने आधुनिक काल में किसी भारतीय शासक को हराया था ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)

कारण:

1. हैदराबाद तथा कर्नाटक राज्य में उत्तराधिकार का मुद्दा ।
   हैदराबाद - हैदराबाद में उत्तराधिकार को लेकर निजाम आसफ़जाह के पुत्र -नासिर जंग और भतीजे मुजफ़्फ़रजंग (आसफजहा का पौत्र) के तथा कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चंदा साहिब के बीच विवाद। इसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी भी कूद पड़े । फलत: दो गुट बन गये।डूप्ले ने चंदा साहिब तथा मुजफ्फर जंग को तथा अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को समर्थन प्रदान किया।

दो गुट

MCF	NAE
मुजफ्फर जंग चंदा साहिब फ्रांसीसी	नासिर जंग अनवरुद्दीन अंग्रेज

2. अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षा/प्रतिस्पर्द्धा

परिणाम: पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।

अम्बर का युद्ध (1749 ई.) -

- **1749 में** फ्रेंच सेना की सहायता से एक युद्ध में **चंदासाहब ने अंबर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार** डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया तथा चंदा साहिब कर्नाटक के अगले नवाब बने। अनवरुद्दीन का पुत्र **मुहम्मद अली** युद्ध में बचकर भाग गया और उसने **त्रिचनापल्ली** में शरण ली ।
- लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ।
- 1750 में नासिर जंग भी फ्रेंच सेना से संघर्ष करता हुआ मारा गया **और मुजफ्फर जंग हैदराबाद** का नबाब बना दिया गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था।
- इसी बीच **राबर्ट क्लाइव** ने 1751ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया।
- फ्रांसिसीयो ने चांदा साहब की सेना की साथ मिलकर दुर्ग को घेर लिया अंग्रेजो की तरफ से क्लाइव इस घेरे को तोड़ने में असफल रहा और क्लाइव ने अपनी सूझ बूझ से कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर अधिकार कर लिया
- **1752** में **स्ट्रिगर लॉरेंस** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने त्रिचनापल्ली को बचा लिया और फ्रांसिसी सेना ने अंग्रेजो के

सामने आत्मसमर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।

- डुप्ले को वापस बुला लिया गया तथा 1754 में **गोडेहू** अगला फ्रांसिसी गवर्नर बनकर भारत आया । पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।
- डूप्ले के बारे में **जे.और.मैरियत** ने कहा कि '**डूप्ले ने भारत की कुंजी मद्रास में तलाश कर भयानक भूल की, क्लाइव ने इसे बंगाल में खोज लिया।**

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)

- **कारण:** यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ होना। तात्कालिक कारण - क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार करना।
- **नेतृत्व:** फ्रांसीसी (काउण्ट लाली) एवं अंग्रेज (आयरकूट)
- **परिणाम:-** 22 जनवरी 1760 ई. के वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह पराजित किया अंग्रजो ने भारत में अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त कर सबसे बड़ी शक्ति बनकर सामने आये अब उनका मुकाबला केवल भारतीय राजाओ से था।
- **संधि -** 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ ।

फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की जीत के कारण

- **दोनों कम्पनियों के ढाँचे में अन्तर -** सरकार एवं निजी
- **यूरोप में फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति एवं स्थायित्व काफी मजबूत था** (पार्लियामेण्ट (अंग्रेज) एवं निरंकुश राजशाही (फ्रांस)
- ब्रिटेन में कृषि एवं **औद्योगिक क्रान्ति** के परिणामस्वरूप फ्रांस की अपेक्षा आर्थिक समृद्वि अधिक बेहतर
- हिन्द महासागर में अंग्रेजी नौसेना का काफी दबदबा। उन्होनें प्रारम्भ से ही मद्रास, बम्बई, कलकत्ता के नौसैनिक ठिकानों का विकास किया।
- फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों ने प्रारम्भ से ही **व्यापार-वाणिज्य, राजस्व प्राप्ति** पर विशेष ध्यान दिया। अंग्रेजों (क्लाइव) की बंगाल को आधार बनाकर विस्तार की रणनीति

अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण

- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अन्य कंपनियों के विपरीत एक निजी कंपनी थी।
- ब्रिटेन के पास विशाल एवं अत्याधुनिक नौसेना होना।
- ब्रिटेन में कृषि एवं औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक सम्पन्नता
- ब्रिटेन के पास एक अनुशासित और तकनिकी रूप से विकसित सेना का होना
- फ्रांस, डच आदि के विपरीत ब्रिटेन में एक स्थायी शासन की उपस्थिति
- अन्य कंपनियों की रूचि ईसाई धर्म के प्रसार में अधिक थी, जबकि अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी धर्म से ज्यादा व्यापार विस्तार में रूचि रखते थे।
- ऋण बाजार का उपयोग- **दुनिया के पहला केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड** की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाजारों में बेचने के लिए की गई थी।

2
CHAPTER

मुगल साम्राज्य का पतन

- औरंगजेब के शासनकाल (1658-1707) ने भारत में मुगल शासन के अंत की शुरुआत को चिह्नित किया।
- कारण:
    - औरंगजेब की पथभ्रष्ट नीतियां
    - कमजोर उत्तराधिकारी और राज्य की स्थिरता में कमी।
    - उत्तर पश्चिमी सीमाओं की उपेक्षा
    - फारसी सम्राट नादिर शाह ने 1738-39 में भारत पर हमला किया, लाहौर पर विजय प्राप्त की और 13 फरवरी, 1739 को करनाल में मुगल सेना को हराया।

विदेशी आक्रमण

नादिर शाह का आक्रमण (1739)

- ईरान/फारस के सम्राट
- आक्रमण के कारण
    1. 1736, मुहम्मद शाह रंगीला ने फारसी अदालत के साथ सभी राजनयिक संबंध तोड़ दिए।
    2. नादिर के दूत को रंगीला ने हिरासत में लिया
    3. मुहम्मद शाह ने नादिरशाह के विद्रोहियों को आश्रय दिया
    4. निजाम-उल-मुल्क और सआदत खान ने नादिर शाह को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।
- उसने **जलालाबाद, पेशावर** पर कब्जा कर लिया और लाहौर की ओर बढ़ गया।
- लाहौर के गवर्नर जकारिया खान ने बिना किसी लड़ाई के आत्मसमर्पण कर दिया।
- नादिर ने एक सोने का सिक्का चलाया और उसके नाम पर **खुतबा** पढ़ा।
- नादिर और मुहम्मद शाह करनाल में 1739 ई. में लड़े।
- **परिणाम:** मुहम्मद शाह हार गया और 25 करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए सहमत हो गया। सिंध, पश्चिमी पंजाब और काबुल सहित ट्रांस-सिंधु प्रांतों को नादिर को सौंप दिया गया। नादिर शाह ने प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा छीन लिया।

अहमद शाह अब्दाली (या अहमद शाह दुर्रानी)

- नादिर शाह का उत्तराधिकारी
- 1748 और 1767 के बीच कई बार भारत पर आक्रमण किया।
- 1757 में, दिल्ली पर कब्जा कर लिया और मुगल सम्राट पर नजर रखने के लिए एक अफगान कार्यवाहक को रखा।
- अब्दाली ने आलमगीर द्वितीय को मुगल सम्राट और रोहिल्ला प्रमुख नजीब-उद-दौला को साम्राज्य के मीर बख्शी, अब्दाली के 'सर्वोच्च एजेंट' के रूप में मान्यता दी थी।
- 1758 में, नजीब-उद-दौला को मराठा प्रमुख, रघुनाथ राव ने दिल्ली से निष्कासित कर दिया तथा पंजाब पर भी कब्जा कर लिया।

पानीपत का तीसरा युद्ध, 1761 ई.-

- सदाशिव राव भाऊ के नेतृत्व में मराठा तथा अहमद शाह अब्दाली के नेतृत्व में अफगान तथा दोआब के रोहिल्ला अफगान और अवध के नवाब शुजा-उद-दौला की संयुक्त सेनाओ के मध्य
- सेना: फ्रांसीसी घुड़सवार सेना ने मराठा का समर्थन किया
- शुजा-उद-दौला द्वारा अफगानों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई
- परिणाम: मराठा की पराजय
- अब्दाली के अंतिम आक्रमण 1767 में हुए।

उत्तर कालीन मुगल साम्राज्य

औरंगजेब की मृत्यु 3 मार्च 1707 ई0 में अहमद नगर में हुई उसे दौलताबाद में दफना दिया गया। इस समय उसके तीन पुत्र जीवित थे-मुअज्जम, आजम एवं कामबक्श।

बहादुरशाह प्रथम (1707-12)	• **मूल नाम** -मुअज्जम • **अन्य नाम** -शाह आलम प्रथम • **उपाधि** -शाह-ए-बेखबर यह उपाधि दरबारी इतिहासकार ख़ाफ़ी खान ने दी • यह एक सहिष्णु शासक था • **जजाऊ का युद्ध (18 जून 1707):-** आगरा के पास स्थित इसी स्थान पर बहादुर शाह ने आजम को पराजित कर मार डाला। • **बीजापुर का युद्ध (जनवरी 1709):-** यह युद्ध बहादुरशाह और कामबक्श के बीच हुआ। इसमें भी बहादुर शाह की विजय हुई काम्बक्श मारा गया । इस प्रकार बहादुर शाह दिल्ली का शासक बना। • बहादुर शाह के दरबार में 1711 ई. में एक डच प्रतिनिधि मण्डल जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में आया। इस प्रतिनिध मण्डल के स्वागत में एक

	पुर्तगाली स्त्री जुलियाना की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसे "बीबी, फिदवा आदि उपाधियाँ दी गयी थी। • 1712 में बहादुर शाह की मृत्यु हो गयी इस कारण पुनः गृह युद्ध छिड़ गया। • बहादुर शाह के चार पुत्र थे जहाँदार शाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान, और जहानशाह। इस उत्तराधिकार संघर्ष में जहाँदार शाह विजयी हुआ क्योंकि उसे अपने सामन्त जुल्फिकार खाँ का समर्थन मिला। • ओवन सिडनी ने लिखा है **"बहादुरशाह अंतिम मुग़ल शासक था जिसके बारे में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं"**
जहाँदार शाह (1712-13)	• यह एक **सहिष्णु शासक** था • यह एक कमजोर शासक था • इसे **लम्पट मूर्ख** कहा जाता था • जहाँदार शाह को गद्दी इसलिए प्राप्त हुई क्योंकि इसे इरानी गुट के वजीर जुल्फिकार खान का सहयोग प्राप्त था सत्ता की असली ताकत उसी के पास थी। जुल्फिकार खां ने साम्राज्य की वित्तीय स्थिति बेहतर बनाने के लिए **इजारा प्रथा** की शुरुआत की। • **इसके समय की प्रमुख घटनायें निम्नलिखित है-** • जजिया कर समाप्त कर दिया गया। • अजीतसिंह को महाराजा और **जयसिंह को मिर्जा राजा** की उपाधि दी। • जहाँदार शाह **लालकुँवर नामक वेश्या** पर आसक्त था। • सैय्यद बंधुओं के सहयोग से जहाँदार के भतीजे फ़र्रुखशियर के द्वारा जहाँदार शाह की हत्या कर दी गयी तथा फर्रुखसियर शासक बना।
फर्रुखसियर (1713-19)	• फर्रुखसियर **सैयद बन्धुओं अब्दुल्ला खाँ एवं हुसैन अली खाँ के** सहयोग से राजा बना । **अब्दुल्ला खाँ को वजीर** का पद तथा **हुसैन को मीर बक्शी** का पद मिला। • फर्रुखसियर ने **जयसिंह को सवाई की उपाधि दी।** • गद्दी पर बैठते ही **जजिया को हटाने** की घोषणा की तथा **तीर्थ यात्री कर** भी हटा दिये। • 1716 ई. में **बन्दा बहादुर को दिल्ली में फाँसी** दे दी गयी।

	• जोधपुर के राजा अजीत सिंह ने अपनी पुत्री का विवाह फर्रूखशियर से कर दिया। • 1717 ई. में एक शाही फरमान के जरिये अंग्रेजों को व्यापारिक छूट प्रदान की गई। इसे **कम्पनी का मैग्नाकार्टा** कहा गया। • सैयद बन्धुओं में छोटे भाई हुसैन ने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ से एक सन्धि की जिसके तहत दक्षिण का चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार मराठों को मिल गया। बदले में शाहू 15000 घुड़सवारों के साथ सैयद बन्धुओं को समर्थन देने के लिए तैयार हो गया परन्तु इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने से मना करने पर फर्रुखसियर की हत्या कर दी गयी।
रफी-उद-दरजात (28 फरवरी 1719- 4 जून 1719)	• यह सबसे कम समय तक शासन करने वाला मुगल शासक था। • इसके समय की सबसे प्रमुख घटना निकूसियर का विद्रोह था। निकूसियर औरंगजेब के पुत्र अकबर का पुत्र था। इसकी मृत्यु **क्षयरोग** से हुई।
रफीउद्दौला (6 जून 1719- 17 सितम्बर 1719)	• **उपाधिः-** शाहजहाँ द्वितीय • सैय्यद बन्धुओं ने इसे भी गद्दी पर बैठाया, यह अफीम का आदी था। इसकी मृत्यु पेचिश से हुई।
मुहम्मद शाह (1719-48)	• मुहम्मद शाह, बहादुर शाह के सबसे छोटे पुत्र जहानशाह का पुत्र था। • अन्य नामः- रौशन अख्तर • उपाधिः- इसे रंगीला बादशाह भी कहते है • यह सैय्यद बंधुओ के सहयोग से राजा बना और इसने सैय्यद बंधुओ की ही हत्या करवा दी • इसके काल की प्रमुख घटनायें निम्नलिखित हैं- • सैय्यद बन्धुओं का पतन। • स्वतंत्र राज्यों का उदय-जैसे-हैदराबाद, अवध, बंगाल, बिहार आदि। • इसके समय 1739 में विदेशी आक्रमण नादिरशाह के द्वारा हुआ । नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है और करनाल के युद्ध में नादिरशाह मुहम्मद शाह को हरा देता है एवं एवं कोहिनूर हीरा एवं मयूर सिंहासन या तख़्त ए ताऊस अर्थात सोने का सिंहासन लूट कर ले जाता है।

	• मुहम्मद शाह के समय में ही प्रान्तीय राजवंशों का उदय हुआ एवं दिल्ली सल्तनत की सत्ता वास्तविक रूप में छिन्न-भिन्न हो गई।
अहमद शाह (1748-54)	• मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका एक मात्र पुत्र अहमदशाह गद्दी पर बैठा। • इसका जन्म एक नर्तकी से हुआ था। • इसके समय में राजकीय काम-काज इसकी माँ ऊधमबाई (उपाधि-क़िबला-ए-आलम) देख रही थी। • अहमद शाह अब्दाली ने अपना प्रथम आक्रमण 1747 में किया। • अहमद शाह अब्दाली के सर्वाधिक आक्रमण इसी के काल में हुए • इसके समय में मुगल अर्थ व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। सैनिकों को वेतन देने के लिए पैसा नहीं बचा। फलस्वरूप कई स्थानों पर सेना ने विद्रोह कर दिया। • इसके वजीर इदामुलमुल्क ने अहमदशाह को गद्दी से हटवाकर जहाँदार शाह के पुत्र आलमगीर द्वितीय को गद्दी पर बैठाया।
आलमगीर द्वितीय (1754-1758)	• **इसके शासन काल में वास्तविक शक्ति वजीर गाजुद्दीन के हाथो में चली गयी** • इसी के काल में अब्दाली दिल्ली तक आ गया। • प्लासी के युद्ध के समय यही दिल्ली का शासक था। • इसकी हत्या इसके वजीर इमादुल मुल्क ने कर दी।
शाहजहाँ तृतीय (1758-59)	• आलमगीर द्वितीय के समय उसका पुत्र अली गौहर बिहार में था जहाँ उसने शाह आलम द्वितीय के नाम से स्वयं को सम्राट घोषित किया। • इसी समय दिल्ली में इमादुलमुल्क ने कामबक्श के पौत्र शाहजहाँ तृतीय को सिंहासन पर बिठा दिया। इस प्रकार **पहली बार दिल्ली की गद्दी पर दो अलग-अलग शासक सिंहासनरुढ़ हुए।**
शाह आलम द्वितीय (1759-1806)	• **अन्य नाम:-अली गौहर,** • **मराठा और अंग्रेजो को नजर में यह नाम मात्र का शासक था** • **इसके शासन काल में दक्षिण में अकाल पड़ा** • इसी के समय में पानीपत का तृतीय युद्ध 1761 ई. में हुआ। • बक्सर का युद्ध 1764 ई. में हुआ। • इस युद्ध में पराजय के बाद शाह आलम द्वितीय क्लाइव को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्रदान की। • इसी के बाद यह अंग्रेजों के संरक्षण में 1765 से 72 तक इलाहाबाद में रहा। • 1772 में मराठा सरदार महादजी सिंधिया इसे दिल्ली ले आये परन्तु नजीबुद्दौला के पौत्र गुलाम कादिर ने 1788 ई. में शाहआलम को अन्धा बना दिया। • 1803 ई. में अंग्रेज सेनापति **लेक ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।** 1803 ई. में इसने पुनः अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर लिया। अब मुगल शासक केवल अंग्रेजों के पेंशनर बनकर रह गये।
अकबर-द्वितीय (1806-37)	• **इसके शासन काल में मुग़ल सत्ता अंग्रेजो के संरक्षण में आ गयी** • **यह अंग्रेजो में संरक्षण में बनने वाला पहला शासक था** • इसने राजा राम मोहन राय को **राजा** की उपाधि। • 1835 ई. से मुगलों के सिक्के चलने बन्द हो गये। • एमहर्स्ट पहला अंग्रेज गर्वनर जनरल था। जिसने अकबर द्वितीय से बराबरी के स्तर पर मुलाकात की।
बहादुरशाह-द्वितीय (1837-57)	• यह अन्तिम मुगल बादशाह था। • यह 'जफ़र' उपनाम से शायरी लिखता था इसलिए बहादुरशाह जफ़र कहलाया। • 1857 ई. का विद्रोह इसी के समय में हुआ। इसे ही इस विद्रोह का नेता बनाया गया। • विद्रोह के बाद इसे गिरफ्तार कर लिया गया और इसको हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया गया। वहीं 1862 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

मुगल साम्राज्य के पतन के एक नही अनेक कारण थे। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण योग्य उत्तराधिकारियों का अभाव था।

- **अयोग्य उत्तराधिकारी:**– औरंगजेब के मृत्यु के बाद उत्तर कालीन मुगल शासक आयोग्य थे।
- **दरबारी गुटबन्दी:-** उत्तर-कालीन मुगल शासकों के समय में दरबार में विभिन्न गुट-जैसे-ईरानी, अफगानी, तुरानी आदि कार्य कर रहे थे।
- **औरंगजेब का उत्तरदायित्व:-** औरंगजेब की धार्मिक और दक्षिण नीतियों ने साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। औरंगजेब की विभिन्न नीतियों से गैर मुस्लिमों में निराशा व्याप्त थी।

- **सैनिक अदक्षता**:- ब्रिटिश लेखक आरविन ने सैनिक अदक्षता को ही इनके पतन का मूल कारण माना है।
- **मनसबदारी व्यवस्था में द्वोष:-** डा. सतीश चन्द्र ने अपनी पुस्तक '**पार्टीज एंड पॉलिटिक्स एट द मुगल कोर्ट**' में मनसबदारी व्यवस्था में आये द्वोष को ही मुगलों के पतन का प्रधान कारण माना।
- **अप्रभावी मुगल सेना, नौसेना शक्ति की उपेक्षा**
- **सामाजिक व्यवस्था**:- डा. जदुनाथ सरकार ने लिखा है कि इस समय भारतीय समाज सड़ गया था। जातियां उप जातियाँ में विभक्त हो गई थी। ईरानी मुस्लिम, भारतीय मुस्लिम आदि अनेक सामाजिक वर्ग थे। जिनके बीच कोई तारतम्य नही था। ऐसे समाज का पतन होना स्वाभाविक था।
- **कृषि संकट:-** डा. इरफान हबीब ने कृषि संकट को ही मुगल साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण माना है। बर्नियार ने भी उल्लेख किया था कि कृषक लोग अपनी-अपनी जमीन छोड़कर अत्याचारों के कारण भाग जाते थे।
- **क्षेत्रीय शक्तियों का उदय-** जाट, सिख और मराठों जैसे शक्तिशाली क्षेत्रीय समूहों ने अपने स्वयं के राज्य बनाने के लिए सत्ता की अवहेलना करना शुरू कर दी।
- इस प्रकार उपर्युक्त सभी कारणों ने मुगल साम्राज्य के पतन में किसी न किसी प्रकार से योगदान किया।

3
CHAPTER

नए राज्यों का उदय

- जो राज्य भारत में **मुगलों के पतन** के चरण और **अगली शताब्दी** (1700 ई. और 1850 ई . के मध्य) के दौरान **उत्पन्न** हुए, वह आवश्यक चरित्र, **राज्य संसाधन** और अपने **जीवन काल** के संदर्भ में बहुत **भिन्न** थे।
- इस प्रकार अवधि के क्षेत्रीय राज्यों को **तीन श्रेणियों में विभाजित** किया जा सकता है:

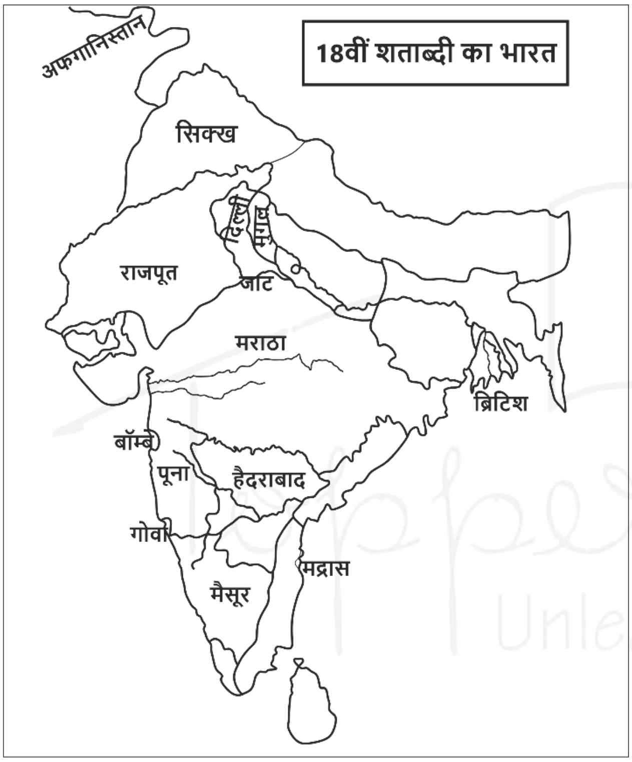

1. उत्तराधिकारी राज्य

- **मुगल प्रांत** जो **साम्राज्य से अलग** होकर **राज्यों** में बदल गए।
- हालांकि उन्होंने मुगल शासक की संप्रभुता को चुनौती नहीं दी, लेकिन उनके **राज्यपालों द्वारा** वस्तुतः स्वतंत्र और **वंशानुगत सत्ता की स्थापना** को **चुनौती** दी गई।
- इस श्रेणी के कुछ **प्रमुख राज्य** अवध, बंगाल और हैदराबाद थे।

बंगाल	• संस्थापक: **मुर्शीद कुली खान**। • 1727 में उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र शुजाउद्दीन बना। • 1740 में, शुजाउद्दीन के उत्तराधिकारी **सरफराज खान**, **अलीवर्दी खान** द्वारा मारे गए • अलीवर्दी खान ने सत्ता संभाली और नजराना देकर खुद को मुगल सम्राट से स्वतंत्र कर लिया। • 1756 ई. से 1757 ई. तक, अलीवर्दी खान के उत्तराधिकारी, **सिराजुद्दौला** ने व्यापारिक अधिकारों को लेकर अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ी। • 1757 ई. में **प्लासी की लड़ाई** में **सिराजुद्दौला** की हार ने अंग्रेजों द्वारा बंगाल के साथ-साथ भारत के अधीन होने का मार्ग प्रशस्त किया। • 22 अक्टूबर 1764 को **बक्सर के युद्ध** में **मीरकासिम** अंग्रेजों से पराजित हुआ।
अवध	• संस्थापक: **सादत खान** (बुरहान-उल-मुल्क)। • सशस्त्र और अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना • उनके उत्तराधिकारियों, **सफदर जंग** और **आसफ-उद-दौला** ने अवध प्रांत को दीर्घकालिक प्रशासनिक स्थिरता प्रदान की। • 1773 ई. में नवाब शुजौद्दोला तथा अंग्रेजों के मध्य बनारस की संधि हुई। • आसफुद्दौला ने राजधानी फैजाबाद से **लखनऊ** स्थानांतरित की • आसफुद्दौला के समयसमय 1775 ई. की **फैजाबाद की संधि** द्वारा बनारस पर अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्वीकार ली गयी • वाजिद अली शाह अवध का अंतिम नवाब था। लॉर्ड डलहौजी ने 1854 ई. में आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर **कुशासन** का आरोप लगाकर 1856 ई. में अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। • फैजाबाद और लखनऊ कला, साहित्य और शिल्प के क्षेत्र में सांस्कृतिक उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में उभरे। • इमामबाड़ और अन्य इमारतों में क्षेत्रीय वास्तुकला परिलक्षित होती है। • **कथक नृत्य** का विकास
हैदराबाद	• संस्थापक: **चिनकिलिच खान** (निजाम-उल-मुल्क)।

	• मुबारिज खान को दक्कन का पूर्ण वायसराय नियुक्त पर मुगल सम्राट से निराश होकर मुबारिज खान से लड़ने का फैसला किया। • **सकूर-खेड़ा (**1724) की लड़ाई में चिनकिलिच खां ने **मुबारिज खान** को हराया और मार डाला। • 1725 में, वह वायसराय बन गया और मुग़ल बादशाह ने उसे **आसफ-जाह** की उपाधि से सम्मानित किया।

2. योद्धा राज्य

मराठा राज्य	• **गुरिल्ला युद्ध** नीति का प्रयोग • तुकाराम, रामदास, वामन पंडित और एकनाथ जैसे आध्यात्मिक नेताओं के प्रभाव में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन ने सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया। • राजनीतिक एकता **शाहजी भोंसले** और उनके पुत्र **शिवाजी** ने प्रदान की थी। • उत्तर की ओर विस्तार शुरू किया और मालवा और गुजरात से मुगल सत्ता को उखाड़ फेंका और अपना शासन स्थापित किया। • अहमद शाह अब्दाली के खिलाफ **पानीपत की तीसरी लड़ाई** (1761) में पराजित। • अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए एक बड़ी चुनौती
सिख	• गुरु गोविंद सिंह ने सिखों को एक **सैनिक और लड़ाकू संप्रदाय** में बदल दिया • **12 मिसल** या संघों में संगठित • पंजाब के मजबूत राज्य की स्थापना **महाराजा रणजीत सिंह** ने की। • मुगल शासन के खिलाफ सिख विद्रोह की परिणति। • **सतलुज से झेलम तक का क्षेत्र** रणजीतसिंह ने अपने नियंत्रण में कर लिया, 1799 में लाहौर और 1802 में अमृतसर पर विजय प्राप्त की। • अंग्रेजों के साथ **अमृतसर की संधि** (25 अप्रैल 1809) द्वारा, सतलुज के पूर्व के राज्य ब्रिटिश नियंत्रण में आ गये। • अंग्रेजों ने उन्हें 1838 में **शाह शुजा के साथ त्रिपक्षीय संधि** पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। • 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई, उनके उत्तराधिकारी राज्य को बरकरार नहीं रख सके और अंग्रेजों ने इस पर अधिकार कर लिया।
जाट	• **दिल्ली-मथुरा क्षेत्र** में रहने वाले कृषक और देहाती जाति। • जहाँगीर के समय से ही मुगल राज्य के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया • औरंगजेब की दमनकारी नीतियों के खिलाफ विद्रोह किया। • **सूरज मल** के काल में जाट सत्ता अपने चरम पर पहुंच गई। • उनके राज्य में **पूर्व में गंगा से लेकर दक्षिण में चंबल तक** के क्षेत्र शामिल थे और **आगरा, मथुरा, मेरठ और अलीगढ़** के सूबे शामिल थे। • 1763 में सूरज मल की मृत्यु के बाद जाट राज्य का पतन हुआ।

3. स्वतंत्र राज्य

राजपूत	• अन्य क्षेत्रों को नियंत्रित करने में मुगलों की सहायता की। • **मारवाड़ के उत्तराधिकार** विवाद में **औरंगजेब के हस्तक्षेप** के कारण मुगल संबंधों को नुकसान हुआ। • 18वीं शताब्दी में अपनी स्वतंत्रता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जिस कारण **बहादुर शाह प्रथम** को **अजीत सिंह (1708)**, जिन्होंने **जय सिंह द्वितीय** और **दुर्गादास राठौर** के साथ गठबंधन बना लिया था के विरुद्ध कार्यवाही की लेकिन गठबंधन टूट गया और स्थिति मुगलों के पक्ष में रही। • अधिकांश बड़े राजपूत राज्य लगातार संघर्षों में शामिल थे।
मैसूर	• **वाडयार वंश** द्वारा शासित। • इस क्षेत्र में रुचि रखने वाली विभिन्न शक्तियों के मध्य निरंतर टकराव • अंत में मैसूर राज्य का शासन **हैदर अली** और **टीपू सुल्तान** के नियंत्रण में आया तथा इसी के साथ **मैसूर तथा अंग्रेजो** के मध्य प्रतिद्वंदिता शुरू हुई।
त्रावनकोर (केरल)	• संस्थापक: **राजा मार्तंड वर्मा** (राजधानी के रूप में त्रावणकोर) • उसने अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार **कन्याकुमारी से कोचीन** तक किया। • **पश्चिमी मॉडल पर आधारित** संगठित सेना। • सीरियाई ईसाइयों को संरक्षण • उन्होंने कई वस्तुओं को शाही एकाधिकार की वस्तुओं के रूप में घोषित किया, जिसके लिए व्यापार के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होती है, जैसे कि **काली मिर्च**। • मार्तंड वर्मा के बाद, **राम वर्मा (1758ई.-98 ई.)** शासक बने।

4 CHAPTER भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार

- मुगल शासन के पतन के दौरान, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने **18वीं शताब्दी के मध्य** तक एक राजनीतिक शक्ति विकसित की।
- अंग्रेज व्यापारियों के रूप में आए, परन्तु उन्होंने महसूस किया कि भारतीय व्यापार से लाभ प्राप्त करने के लिए, बलपूर्वक **राजनीतिक सत्ता** हासिल करनी होगी।

वणिकवाद

- 16वीं से 18वीं शताब्दी तक व्यापार की **आर्थिक प्रणाली।**
- इस विचार के आधार पर कि एक राष्ट्र के **धन** और **शक्ति** में वृद्धि हेतु **निर्यात में वृद्धि** और **व्यापार** महत्वपूर्ण है।
- स्थानीय बाजारों और आपूर्ति स्रोतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्र अक्सर अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि करते है।

वणिकवाद कैसे कार्य करता है ?

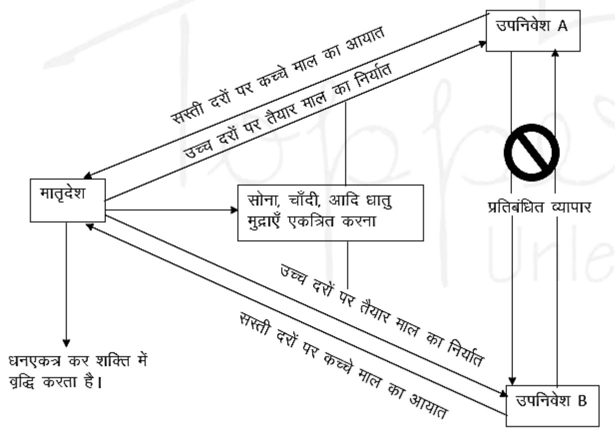

प्राच्यवाद (ओरिएण्टलिज्म)

- एक अवधारणा जो **प्राच्य संस्कृति** और **सभ्यता** की विशिष्टता पर जोर देती है।
- तर्क दिया कि शांति व्यापार को बढ़ावा देगी और यह ब्रिटेन के लाभ के लिए होगा।
- भारतीय संस्कृति और सभ्यता के **अतीत में अनुसंधान करने** के लिए 1784 में **एशियाटिक सोसाइटी** की स्थापना की गई थी।
- **विलियम जोन्स, विल्किंस, एच.टी. कोलब्रुक, डब्ल्यू.एच. विल्सन और मैक्समूलर** प्रसिद्ध प्राच्यविद् थे।
- बंगाल के गवर्नर जनरल **वारेन हेस्टिंग्स** ने **एशियाटिक सोसाइटी** को संरक्षण दिया। **हैलहेड** ने भारत में अंग्रेजों के अधिग्रहण में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए **'जेंटू कानून'** **(Gentoo laws)**तैयार किया।
- **वेलेस्ली** ने भारत के अतीत का अध्ययन करने के लिए 1800 में **कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की।
- फोर्ट विलियम कॉलेज का फोकस छात्रों को **भारतीय भाषाओं में छात्रवृत्ति** प्रदान करना था ताकि वे अच्छे प्रशासक बन सकें।

Unleash the topper in you

भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताएँ

कंपनी की क्षेत्रीय और वाणिज्यिक महत्वाकांक्षाएं	• कंपनी ने भारत में आक्रामक व्यापारिक नीति का पालन किया।
कंपनी का बढ़ता साहस	• कमजोर शासकों का सामना करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को सशक्त बनाया। कंपनी ने बंगाल में फर्रुखसियार द्वारा दिए गए विशेषाधिकारों का दुरुपयोग किया तथा राज्यों के नियमो को तोडा।
भारतीय शक्तियों में एकता का अभाव	• क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा विस्तार के लिए लडे युद्धों ने यूरोपीय लोगों को भारतीय मामलों में दखल देने का मौका दिया।
कंपनी की गठबंधन कूटनीति	• कंपनी ने विजयदुर्ग स्थित तुलाजी आंग्रे को हराने के लिए पुर्तगालियों और बाद में पेशवा (1756) के साथ गठबंधन किया। बंगाल में कंपनी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को खरीदकर सिराजुद्दौला को अलग कर दियाऔर टीपू सुल्तान के खिलाफ युद्ध में हैदराबाद के निजामों को शामिल कर लिया।

बंगाल के संसाधन	• बंगाल की विजय (1757-65) ने भारत के अन्य क्षेत्रों को जीतने के लिए आवश्यक धन, संसाधन और सामग्री प्रदान की।
भारतीय शासकों का अपर्याप्त आधुनिकीकरण और संस्थागत कमजोरियाँ	• भारतीय राज्य कंपनी की तरह सैन्य वित्त की एक प्रणाली विकसित करने में विफल रहे। यूरोपीय भाड़े के सैनिकों पर अत्यधिक निर्भरता कुछ मामलों में घातक साबित हुई।
भारतीय शासकों से जनता का अलगाव	• भारतीय राज्यों ने अपने प्रतिरोध को जन प्रतिरोध में बदलने की कोशिश नहीं की इसलिए भारतीय किसानों को अपने शासकों से सहानुभूति नहीं थी। • मराठा, और पिंडारियो की लूटपाट के कारण वे लोगो को प्रिय नही थे।

बंगाल

- एशिया से लगभग **60% ब्रिटिश आयात** में बंगाल का माल शामिल था।
- 1700 में, मुर्शीद कुली खान बंगाल के दीवान बने और 1727 में अपनी मृत्यु तक शासन किया।
- उनके बाद **उनके** दामाद **शुजाउद्दीन** ने 1739 तक शासन किया।
- उसके बाद, एक वर्ष (1739-40) के लिए, **सरफराज खान** मुर्शिद कुली खान का एक अक्षम पुत्र, शासक बना; **अलीवर्दी खाँ ने उसकी हत्या** कर दी।
- अलीवर्दी खान ने 1756 तक शासन किया और **मुगल सम्राट को नजराना देना** भी बंद कर दिया। इन शासकों के शासन में बंगाल ने अभूतपूर्व प्रगति की।
- **अंग्रेजों के व्यापारिक हित** बंगाल सरकार तथा अंग्रेज दोनों के बीच टकराव का मुख्य कारण बन गए।
- **1757 और 1765 के बीच एक छोटी अवधि के दौरान**, सत्ता धीरे-धीरे बंगाल के नवाबों से अंग्रेजों को हस्तांतरित हो गई।

<u>मुर्शिदकुली खाँ (1717-1727 ई.)</u>

- इसे **औरंगजेब** द्वारा 1700 ई. में बंगाल का दीवान बनाया गया। इस समय **बंगाल का सूबेदार अजीमुशान** था। मुगल **सम्राट फर्रूखसियर** ने 1717 में **मुर्शिदकुली खाँ** को **बंगाल** का सूबेदार नियुक्त किया। इसने राजधानी ढाका से **मुर्शिदाबाद** स्थानांतरित कर दी।
- यह मुगल बादशाह द्वारा नियुक्त **बंगाल का अंतिम सूबेदार** था। इसी के साथ बंगाल में **वंशानुगत शासन** की शुरूआत हुई।
- इसने **भूमि बंदोबस्त में इजारेदारी प्रथा** शुरू की।

<u>शुजाउद्दीन खां (1727-1739 ई.)</u> ने 1733 ई. में **बिहार** के सूबे को बंगाल के अधीन कर किया।

<u>सरफराज खां (1739ई.)</u> ने **आलम-उद-दौला हैदर जंग** की उपाधि ली।

<u>अलीवर्दी खाँ (1740 -1756 ई.)</u>

- इसने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खी से की और कहा कि **'यदि इन्हें छेडा न जाए तो ये शहद देगी और यदि छेड़ा जाए तो काट-काट कर मार डालेगी।'**
- अलीवर्दी खां ने **सिराजुद्दौला** को अपना उत्तराधिकारी नामित किया।

<u>सिराज-उद्-दौला (1756-57 ई.)</u>

- **राजगद्दी के प्रतिद्वन्दी** : शौकत जंग, घसीटी बेगम, मीर जाफर
- **मनिहारी का युद्ध** (1756 ई.) में **शौकत जंग** को हराया।
- अंग्रेजो ने इस संघर्ष से लाभ उठाने के लिए नवाब के विरोधियों को शरण दी और नवाब की अनुमति के बिना ही किलेबंदी शुरू कर दी।
- अतः सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए। कलकत्ता पर हमला किया और जून 1756ई.में **फोर्ट विलियम** पर अधिकार कर लिया। इस संदर्भ मे **ब्रिटिश अधिकारी हॉलवेल** ने **ब्लैकहोल काण्ड** का उल्लेख किया।
- **फोर्ट विलियम पर नवाब का कब्जा (जून 1756):** नवाब की सेना ने **फोर्ट विलियम पर कब्जा** कर लिया। अंग्रेजों को कलकत्ता से खदेड़ दिया गया। **9 फ़रवरी 1757 ई.** को **सिराजुद्दौला और क्लाइव के बीच** हुई अलीनगर की संधि द्वारा कंपनी के क्षेत्राधिकार और विशेषाधिकार लौटा दिए गए

> **ब्लैक होल घटना (20 जून, 1756)**
> **हॉलवेल** के अनुसार, सिराजुद्दौला ने 20 जून की रात 146 अंग्रेज बंदियों को **18 फुट लंबी** एवं 1**4 फुट 10 ईंच चौड़ी** कोठरी में बन्द कर दिया था। अगले दिन जब देखा तो हालवेल सहित **23 व्यक्ति** ही जिन्दा ही बचे थे। अंग्रेज इतिहासरों ने इस घटना को **ब्लैक हाल त्रासदी** कहा है।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.)

- क्लाइव ने नवाब के संबंधियों और अधिकारियों जैसे **मीरजाफर**(सैन्यप्रमुख), **मणिकचंद** (कलकता का प्रभारी), **अमीनचंद** (पूंजीपति), **जगतसेठ** (बैंकर), **घसीटीबेगम** (नवाब की मौसी) आदि को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
- प्लासी **बंगाल के नादिया जिले के भागीरथी तट पर** अवस्थित है। इस युद्ध में अंगेजी सेना का नेतृत्व **क्लाइव** ने किया।